Toppersnotes®
Unleash the topper in you

छत्तीसगढ़ पुलिस सब–इंस्पेक्टर (SI)

सूबेदार/प्लाटून कमाण्डर

छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग (CGPSC)

भाग - 2

छत्तीसगढ़ का सामान्य ज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	छत्तीसगढ़ सामान्य जानकारी	1
2	छत्तीसगढ़ का इतिहास –प्राचीन काल	7
3	वैदिक काल (1500–600 ई.पू.)	10
4	महाजनपद काल (छठवीं शताब्दी ईसा पूर्व)	13
5	छत्तीसगढ़ में मौर्योत्तर काल	14
6	छत्तीसगढ़ में गुप्त वंश	15
7	छत्तीसगढ़ में गुप्तोत्तर काल	17
8	मध्यकालीन छत्तीसगढ़ कल्चुरी राजवंश (990–1741 ई.)	25
9	छत्तीसगढ़ का आधुनिक इतिहास (1741–1947 ई.)	37
10	छत्तीसगढ़ में ब्रिटिश शासन	43
11	छत्तीसगढ़ में 1857 की क्रान्ति	47
12	छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय आन्दोलन (1885–1947)	49
13	छत्तीसगढ़ की रियासतों का भारत संघ में विलीनीकरण	66
14	छत्तीसगढ़ में आदिवासी विद्रोह	69
15	छत्तीसगढ़ में मजदूर आन्दोलन (1920–40 ई.)	75
16	छत्तीसगढ़ में किसान आंदोलन	77
17	छत्तीसगढ़ की भौगोलिक स्थिति	80
18	छत्तीसगढ़ का प्राकृतिक स्वरूप	82
19	छत्तीसगढ़ का भौतिक विभाजन एवं स्वरूप	84
20	छत्तीसगढ़ का अपवाह क्षेत्र	88
21	छत्तीसगढ़ की जलवायु	95
22	छत्तीसगढ़ की मिट्टी	98
23	छत्तीसगढ़ में वनस्पति और वन्यजीव	100

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	वन्यजीव राष्ट्रीय उद्यान और अभ्यारण्य	103
25	छत्तीसगढ़ कृषि जलवायु प्रदेश और फसल	105
26	छत्तीसगढ़ के प्रमुख खनिज	109
27	छत्तीसगढ़ के उद्योग	112
28	उर्जा	117
29	छत्तीसगढ़ के जनांकिकीय आँकड़े	126
30	छत्तीसगढ़ का गठन	133
31	छत्तीसगढ़ के जिलों का पुनर्गठन	136
32	छत्तीसगढ़ की शासन व्यवस्था	138
33	छत्तीसगढ़ की कार्यपालिका	141
34	छत्तीसगढ़ की न्यायपालिका	146
35	छत्तीसगढ़ की जनजातियाँ	148
36	छत्तीसगढ़ लोक कला एवं संस्कृति	163
37	छत्तीसगढ़ के प्रमुख साहित्य और साहित्यकार	178
38	छत्तीसगढ़ बजट विश्लेषण 2024-25	191

1 CHAPTER

छत्तीसगढ़ सामान्य जानकारी

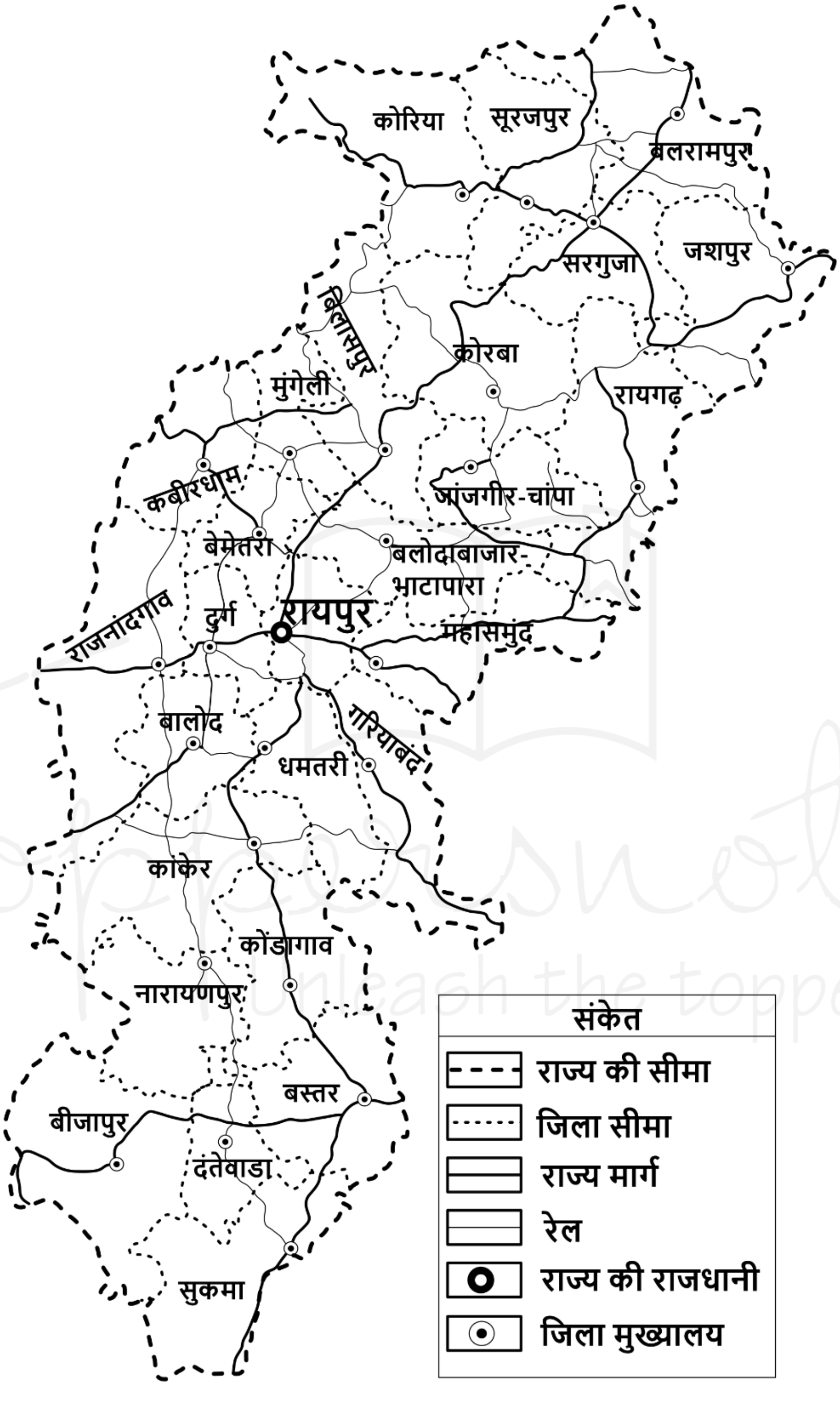

Toppersnotes
Unleash the topper in you

छत्तीसगढ़ राज्य की भौगोलिक सीमा रेखा

क्र.सं	दिशा	राज्य	स्पर्शरत् ज़िलों की संख्या व नाम
1.	पूर्व	ओडिशा	08 (जशपुर, रायगढ़, महासमुंद, गरियाबंद, धमतरी, कोंडागाँव, बस्तर, सुकमा)
2.	पश्चिम-उत्तर	मध्य प्रदेश	07 (बलरामपुर, सूरजपुर, कोरिया, गौरेला- पेंड्रा मरवाही, मुंगेली, कवर्धा, राजनांदगाँव)
3.	पश्चिम	महाराष्ट्र	04 (राजनांदगाँव, कांकेर, नारायणपुर, बीजापुर)
4.	दक्षिण-पश्चिम	तेलंगाना	02 (बीज़ापुर, सुकमा)
5.	उत्तर-पूर्व	झारखंड	02 (बलरामपुर, जशपुर)

6.	उत्तर	उत्तर प्रदेश	01 (बलरामपुर)
7.	दक्षिण	आंध्र प्रदेश	01 (सुकमा)

वर्तमान राज्यपाल	श्री विश्वभूषण हरिचंदन (राज्य के 7वें राज्यपाल)
वर्तमान मुख्यमंत्री	विष्णुदेव साय (राज्य के 4वें मुख्यमंत्री)
स्थापना दिवस	1 नवंबर, 2000 (मध्यप्रदेश से अलग होकर)
राज्य की अवस्थिति	17′-46′ उत्तरी अक्षांश से 24′-5′ उत्तरी अक्षांश तथा 80′-15′ पूर्वी देशांतर से 84′-24′ पूर्वी देशांतर
क्षेत्रफल	1,35,191 वर्ग किमी
घनत्व	189 प्रति वर्ग किमी
जनसंख्या (2011)	25,545,198 (2.56 करोड़)
पुरुषों की जनसंख्या (2011)	12,832,895
महिलाओं की जनसंख्या (2011)	12,712,303
जिले	27
राजधानी	रायपुर
नदियाँ	महानदी, इन्द्रावती, सोन, पैरी, हसदेव, सबरी
वन एवं राष्ट्रीय उद्यान	कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान, इन्द्रावती राष्ट्रीय उद्यान
भाषाएँ	हिंदी, छत्तीसगढ़ी, मराठी, उड़िया, गोंडी, कोरकू
सीमावर्ती राज्य	मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, झारखण्ड, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, तेलंगाना,आंध्र प्रदेश (7 राज्य)
राजकीय पशु	वन भैंसा (जंगली भैंसा)
राजकीय पक्षी	पहाड़ी मैना (हिल मैना)
राजकीय वृक्ष	साल (सरई)
सकल राज्य घरेलू उत्पाद (GSDP)	2024-25 वित्तीय वर्ष में 5,61,736 लाख करोड़ (2023-24 से 11% अधिक)
साक्षरता दर (2011)	71.04%
1000 पुरुषों पर महिलायें (2011)	991
अनुसूचित जनजाति	78,22,902 (जनसंख्या) 30.60 प्रतिशत
अनुसूचित जाति	32,74,269 (जनसंख्या) 12.82 प्रतिशत
विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र	90
संसदीय (लोकसभा) निर्वाचन क्षेत्र	11
रिकार्ड वन क्षेत्र	59,772 वर्ग किमी (कुल क्षेत्रफल का 44.21%)
अन्य नाम	**धान का कटोरा (अर्थ-चावल का कटोरा) ।**

छत्तीसगढ़ राज्य के प्रतीक

- **छत्तीसगढ़ का राजकीय चिन्ह**

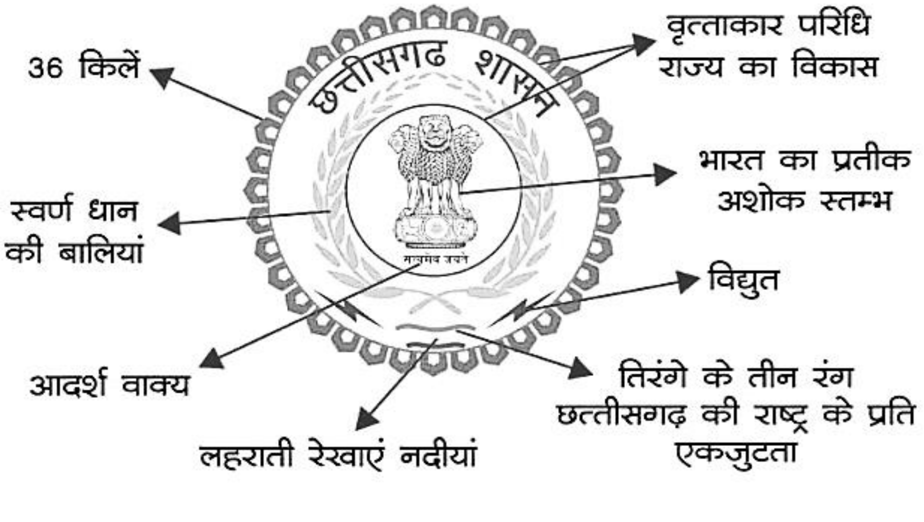

- **04 सितम्बर 2001** को छत्तीसगढ़ राज्य शासन ने प्रतिक चिन्ह को स्वीकृत कर तत्काल प्रभाव से लागू कर दिया।
- यह चिन्ह राज्य की विरासत, अपार संपदा और और इसके उपयोग की अनंत संभावनाओं का प्रतीकात्मक स्वरुप है।
- प्रतीक चिन्ह की वृत्ताकार परिधि राज्य के विकास की निरंतरता को दर्शाती है।
- इस चिन्ह के बाहरी वृत्त में छत्तीसगढ़ के **36 किले वृत्त** पर बाहर की ओर दर्शाती है, इन किलों को हरे रंग दिया गया है मतलब हरा रंग राज्य की समृद्धि, वन सम्पदा और नैसर्गिक सुंदरता को प्रतिबिम्ब करता है।
- इस वृत्त के भीतर धान की बालियां है जो स्वर्णिम आभा लिये हुए है, जो यहां की कृषि पध्दति को दर्शाती है।
- विद्युत संकेत ऊर्जा क्षेत्र में सक्षमता व संभावनाओं को दर्शाती है।
- निचे से ऊपर की ओर तीन लहराती रेखायें राज्य के समृद्ध जल संसाधन एवं नदियों को दर्शाती है।
- तिरंगे के तीन रंग छत्तीसगढ़ की राष्ट्र के प्रति एकजुटता तथा मध्य में राष्ट्रीय सारनाथ के चार सिंह और उसके निचे सत्यमेव जयते राष्ट्र के प्रति सत्यनिष्ठा के प्रतिक को दर्शाता है।

छत्तीसगढ़ का राजकीय प्रतीक वाक्य

- पहले का राज्य प्रतीक वाक्य- **विश्वसनीय छत्तीसगढ़**
- 5 जून 2019 को **गढ़बो नवा छत्तीसगढ़** को राज्य का प्रतीक वाक्य बनाया गया।

छत्तीसगढ़ का राजकीय वृक्ष- "साल /सरई"

- **वैज्ञानिक नाम**- शोरिया रोबुस्ता (Shorea Robusta)।
- वृंदवृत्ति एवं अर्द्धपर्णपाती वृक्ष
- **ऊंचाई 12 से 30 मीटर** एवं **चौड़ाई 15 से 20 फिट**
- **वार्षिक वर्षा**- 9 सेंटीमीटर से लेकर 508 सेंटीमीटर
- **मौसम**- उष्ण तथा कम ठंडा

अन्य तथ्य

- साल का वृक्ष बस्तर जिला में सर्वाधिक संख्या में पाया जाता है। इस कारण से बस्तर को साल वनों का द्वीप भी कहा जाता है।
- साल का वृक्ष लगभग पाँचसौ साल तक जीवित रह सकता है।
- साल के वृक्ष को बस्तर में देवता का दर्जा दिया गया है।
- इनकी लकड़ी इमरती कामों में प्रयोग की जाती है।
- साल की लकड़ी भूरे रंग की कठोर भारी और मजबूत होती है।
- रेल्वे लाइन में भी साल के लकड़ियों का उपयोग किया जाता है।
- साल के वृक्षों से निकलने वाला रेजिन अम्लीय होता है और यह सुगन्धित धूप तथा औषधि के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

Unleash the topper in you

छत्तीसगढ़ का राजकीय पक्षी- "बस्तर की पहाड़ी मैना"

- राज्य शासन ने **जुलाई 2001** को बस्तरिया पहाड़ी मैना को राजकीय पक्षी के रूप में चुना।
- **वैज्ञानिक नाम**- ग्रेटी पेनिन्सुलेरिस
- **आकार**- 28 -30 सेंटीमीटर
- **वजन**- 200 ग्राम से लेकर 250 ग्राम तक।
- **संरचना**- पहाड़ी मैना की चोंच और पैर नारंगी पीले रंग के होते है, और पूरा शरीर चमकीला काले रंग का होता है ।

- **स्थान**- सदाबहार जंगलों तथा नम पतझड़ वाले वनों मे पाई जाती है।
- **मुख्य भोजन**- कीड़े मकोड़े एवं फूलों का रस।
- **राज्य में मुख्य विचरण क्षेत्र**- दंतेवाड़ा, बीजापुर, नारायणपुर, कोंडागांव, जगदलपुर, कांगेर घाटी, गुप्तेश्वर, तिरिया, कूंचा आदि वनों में.
- इसके अस्तित्व के खतरे की वजह से **कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान** में पहाड़ी मैना को संरक्षित किया जा रहा है।
- इसमें मनुष्य की आवाज और भाषा की सटीक नक़ल करने की विशेष प्रतिभा होती है

छत्तीसगढ़ का राजकीय पशु- "वनभैसा/जंगली भैसा"

- **वैज्ञानिक नाम** – बूबालस बुबेसिल (Bubalus Bubalise)
- **क्षेत्र**- बस्तर जिले में इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान, कुटरू वन क्षेत्र एवं उदयन्ती अभ्यारण्य।
- **आकार**- औसतन पांच फिट लम्बा, 900 किलोग्राम वजन, सींग अधिकतम 197.6 सेंटीमीटर लंबे ।
- **संरचना-** सम्पूर्ण शरीर काला, किन्तु जन्म के समय यह लगभग पीला ।
- ये शाकाहारी होते है और घास ही इनका प्रमुख आहार होता है।
- नर जंगली भैंसे को **अरना** और मादा वन भैंसे को **अरनी** कहा जाता है

छत्तीसगढ़ की राजकीय भाषा- "छत्तीसगढ़ी"

- **28 नवम्बर 2007** को राज्य भाषा का दर्जा मिला।
- **छत्तीसगढ़ी राजभाषा दिवस**- 28 नवम्बर (विधेयक पारित होने के उपलक्ष्य में)
- **छत्तीसगढ़ी भाषा की लिपि**- देवनागरी ।
- यह पूर्वी हिन्दी की प्रमुख बोली है।
- प्राचीन काल में छत्तीसगढ़ी भाषा को कोसली कहा जाता था।
- छत्तीसगढ़ भाषा का सबसे प्राचीनतम आलेख- दंतेवाड़ा शिलालेख ।
- **बिजहा कार्यक्रम**- छत्तीसगढ़ी के लुप्त होते शब्दों को संगृहीत करने हेतु ।
- **माई कोठी योजना-** छत्तीसगढ़ी एवं छत्तीसगढ़ी में लिखे साहित्य के एकत्रीकरण के लिए.

छत्तीसगढ़ का राजकीय फल- "कटहल"

- **वानस्पतिक नाम**- औनतिआरिस टोक्सिकारीआ (Antiaris Toxicaria).
- यह एक मध्यम आकार का शाखायुक्त, सपुष्पक तथा बहुवर्षीय वृक्ष है

छत्तीसगढ़ का राजकीय व्यंजन- "पपची"

- गेंहू के आटे में थोड़ा चावल का आटा मिलाकर, मोयन डालकर, पानी से गूंधकर, मोटे चौकोर आकार में तेल मे तलकर, गुड़ की चाशनी में डुबाकर यह कुरकुरा मिठाई बनता है।

छत्तीसगढ़ का राजकीय पुष्प- गेंदा फूल (Marigold)

- **वैज्ञानिक नाम** - राइनोकोस्टिलिस गिगेंटिया (Rhynchostylis Gigantea).

छत्तीसगढ़ का राजकीय गीत- "अरपा पैरी के धार महानदी हे अपार"

- **घोषणा**- 3 नवंबर 2019

- **अधिकृत अधिसूचना**- 18 नवंबर 2019
- **गीत के रचियता**- डॉ. नरेंद्र वर्मा
- इस गीत में चार नदियों का वर्णन है- अरपा, पैरी, महानदी, इंद्रावती
- सात जिलों का उल्लेख है- सरगुजा, रायगढ़, बिलासपुर, रायपुर, राजनांदगाव, दुर्ग एवं बस्तर।

सामान्य जानकारी: प्रमुख तथ्य-

- राज्य का नाम -छत्तीसगढ़
- राज्य का प्राचीन नाम -दक्षिण कोसल
- राज्य की स्थापना -1 नवंबर, 2000 (देश का 26वाँ राज्य)
- राज्य का मातृ राज्य -मध्य प्रदेश
- छत्तीसगढ़ मध्यप्रांत का एक संभाग बना -1862 में
- राज्य की राजधानी -नवा रायपुर (पहले रायपुर)
- राज्य की आकृति -सी. हार्स (समुद्री घोड़े) के समान
- राज्य गठन हेतु अधिनियम -मध्य प्रदेश राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 2000
- राज्य निर्माण का समय -9वीं पंचवर्षीय योजना (1997-2002)
- राज्य की राजकीय भाषा -छत्तीसगढ़ी (स्वीकृति 28 नवंबर, 2007 को)
- राज्य की विधायिका -एकसदनात्मक (विधानसभा)
- राज्य में राज्यसभा सीट -5
- राज्य में लोकसभा सीटें -11
- राज्य में विधानसभा सीटें -90
- राज्य का उच्च न्यायालय -बिलासपुर (देश का 19वाँ उच्च न्यायालय)
- राज्य में रेलवे ज़ोन -दक्षिण-पूर्व मध्य रेलवे (बिलासपुर) (देश का 16वाँ रेलवे ज़ोन)
- राज्य में शासकीय मुद्रणालय -राजनांदगाँव (1989)
- राज्य में ब्रेल लिपि प्रेस -तिफरा (बिलासपुर)
- राज्य का राजस्व मंडल मुख्यालय -बिलासपुर
- राज्य का नृजातीय म्यूज़ियम -जगदलपुर
- राज्य में कुल ज़िलों की संख्या -28 (अगस्त 2019 में घोषित 28वाँ ज़िला- गौरेला-पेंड्रा-मरवाही)
- राज्य निर्माण के समय ज़िलों की संख्या -16
- राज्य निर्माण के बाद 2007 में सृजित ज़िले ख़02 (नारायणपुर, बीज़ापुर)
- दिसंबर 2011 में कुल ज़िलों की संख्या -18
- 2012 में सृजित ज़िले -09
- क्षेत्रफल के अनुसार सबसे बड़ा ज़िला -राजनांदगाँव
- क्षेत्रफल के अनुसार सबसे छोटा ज़िला -दुर्ग
- राज्य गठन के समय कुल संभाग -03 (रायपुर, बिलासपुर, बस्तर)
- वर्तमान में कुल संभाग -05 (रायपुर, बिलासपुर, बस्तर, सरगुजा, दुर्ग)
- राज्य में कुल तहसील -172
- सबसे बड़ी तहसील -पोड़ी उपरोड़ा (कोरबा)
- विकासखंडों की संख्या -146
- आदिवासी विकासखंडों की संख्या -85,
- ज़िला पंचायतों की संख्या -27
- जनपद पंचायतों की संख्या -146
- ग्राम पंचायतों की संख्या -11664
- नगर निगमों की संख्या -14
- नगर पालिकाओं की संख्या -44
- नगर पंचायतों की संख्या -111
- कुल ग्राम (जनगणना 2011) -20126
- कुल आबाद ग्राम (जनगणना 2011) -19576
- कुल वीरान ग्राम (जनगणना 2011) -55

छत्तीसगढ़ के प्रचलित स्थल

छत्तीसगढ़ की काशी/वाराणसी	खरौद
छत्तीसगढ़ का कश्मीर	चैतुरगढ़ (कोरबा)
छत्तीसगढ़ का चित्तौड़	लाफागढ़ (कोरबा)
छत्तीसगढ़ का खजुराहो	भोरमदेव (कबीरधाम)
छत्तीसगढ़ का प्रयाग	राजिम (गरियाबंद)
छत्तीसगढ़ का शिमला	मैनपाट (सरगुजा)
छत्तीसगढ़ का नागलोक	तपकरा (जशपुर)
छत्तीसगढ़ का चेरापूंजी	अबूझमाड़ (नारायणपुर)
छत्तीसगढ़ का प्राचीनतम मंदिर	देवरानी-जेठानी मंदिर (5वीं-6वीं शताब्दी) (तालागाँव, बिलासपुर)
छत्तीसगढ़ की ज्ञान राजधानी	भिलाई (दुर्ग)
छत्तीसगढ़ की तालाबों की नगरी	रतनपुर (बिलासपुर)
छत्तीसगढ़ में मंदिरों की नगरी	आरंग (रायपुर)
छत्तीसगढ़ में टंकियों का शहर	रतनपुर (बिलासपुर)
छत्तीसगढ़ में चौराहों का शहर	जगदलपुर (दंतेवाड़ा)
छत्तीसगढ़ में साल वनों का द्वीप	बस्तर
छत्तीसगढ़ की टमाटर राजधानी	लुडेंग (जशपुर)
छत्तीसगढ़ का शिवकाशी	बिलासपुर

छत्तीसगढ़ में प्रथम

छत्तीसगढ़ का प्रथम क्षेत्रीय राजवंश	राजर्षितुल्य कुल वंश
प्रथम कल्चुरि शासक	कलिंगराज (राजधानी तुम्माण)
प्रथम मराठा शासक	बिंबाजी भोंसले (राजधानी रतनपुर)
प्रथम सूबेदार	महिपत राव दिनकर (राजधानी रतनपुर)
प्रथम ज़िलेदार	कृष्णाराव अप्पा
प्रथम ब्रिटिश अधीक्षक	कैप्टन एडमंड
प्रथम डिप्टी कमिश्नर	चार्ल्स सी. इलियट
प्रथम महिला शासिका	प्रपुल्ल कुमारी देवी
प्रथम जनजाति विद्रोह	हल्बा विद्रोह (1774-1776)
प्रथम मुख्यमंत्री	श्री अजीत प्रमोद कुमार जोगी
प्रथम मुख्य न्यायाधीश	श्री डब्ल्यू.ए. शशांक

Unleash the topper in you

प्रथम कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश	श्री आर.एस. गर्ग
प्रथम निर्वाचन आयुक्त	श्री अजय कुमार सिंह
प्रथम राज्य मानवाधिकार आयोग अध्यक्ष	श्री के. एम. अग्रवाल
प्रथम विधानसभा अध्यक्ष	श्री राजेंद्र प्रसाद
प्रथम विधानसभा उपाध्यक्ष	श्री बनवारीलाल अग्रवाल
प्रथम गृह मंत्री	श्री नंदकुमार पटेल
प्रथम शिक्षा मंत्री	श्री सत्यनारायण शर्मा
प्रथम लोकायुक्त	श्री न्यायमूर्ति कृष्णमुरारी अग्रवाल
प्रथम राज्यपाल	श्री दिनेश नंदन सहाय
प्रथम मुख्य सूचना आयुक्त	श्री ए.के. विजयवर्गीय
प्रथम मुख्य सचिव	श्री अरुण कुमार
प्रथम राज्य महिला आयोग अध्यक्ष	श्रीमती हेमवंत पोर्ते
प्रथम पुलिस महानिदेशक	श्री मोहन शुक्ल
छत्तीसगढ़ राज्य लोक सेवा आयोग के प्रथम अध्यक्ष	श्री मोहन शुक्ल
प्रथम महिला मंत्री (अविभाजित मध्य प्रदेश में)	श्रीमती पद्मावती देवी
प्रथम महिला मंत्री (छत्तीसगढ़ राज्य में)	श्रीमती गीता देवी सिंह
प्रथम महिला सांसद	मिनीमाता (रायपुर संसदीय क्षेत्र से)
छत्तीसगढ़ से सर्वाधिक बार सांसद	स्व. विद्याचरण शुक्ल (9 बार)
छत्तीसगढ़ राज्य गो- सेवा आयोग के प्रथम अध्यक्ष	पवन दीवान
छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत नियामक आयोग के प्रथम अध्यक्ष	एस. के. मिश्र
छत्तीसगढ़ के प्रथम व्यक्ति, जो किसी राज्य के मुख्यमंत्री बने	पं. रविशंकर शुक्ल (मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री)
छत्तीसगढ़ के प्रथम व्यक्ति, जो किसी राज्य के राज्यपाल बने	ई. राघवेंद्र राव (मध्य प्रदेश के राज्यपाल)
छत्तीसगढ़ के प्रथम व्यक्ति, जो मध्य प्रदेश विधानसभा अध्यक्ष बने	मथुरा प्रसाद दुबे

पद्मश्री से सम्मानित प्रथम व्यक्ति	मुकुटधर पांडेय (1976)
पद्मश्री से सम्मानित प्रथम महिला	तीजनबाई (1987)
पद्मभूषण से सम्मानित प्रथम व्यक्ति	हबीब तनवीर (2002)
पद्मभूषण से सम्मानित प्रथम महिला	तीजनबाई (2003)
मिनीमाता सम्मान की प्रथम प्राप्तकर्त्ता	श्रीमती बिन्नी बाई (2001)
डॉ. खूबचंद बघेल सम्मान के प्रथम प्राप्तकर्त्ता	श्रीकांत गोवर्धन (2001)
पं. रविशंकर शुक्ल सम्मान के प्रथम प्राप्तकर्त्ता	केयरभूषण (2001)
पं. सुंदरलाल शर्मा सम्मान के प्रथम प्राप्तकर्त्ता	विनोद कुमार शुक्ल (2001)
गुण्डाधूर सम्मान के प्रथम प्राप्तकर्त्ता	आशीष अरोरा (2001)
प्रथम महाविद्यालय	छत्तीसगढ़ महाविद्यालय, रायपुर (1938)
प्रथम संस्कृत महाविद्यालय	रायपुर (1955)
प्रथम विश्वविद्यालय	इंदिरा कला एवं संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ (राजनांदगाँव) (1956)
प्रथम सामान्य शिक्षा विश्वविद्यालय	पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (1964)
प्रथम निजी विश्वविद्यालय	महर्षि विश्वविद्यालय, बिलासपुर (2002)
प्रथम चिकित्सा महाविद्यालय	पं. नेहरू चिकित्सा महाविद्यालय, रायपुर (1963)
छत्तीसगढ़ का सबसे प्राचीन I.T.I.	कोनी (बिलासपुर 1904)
राज्य का प्रथम विधि विश्वविद्यालय	हिदायतुल्ला राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, रायपुर
राज्य का प्रथम निजी चिकित्सा महाविद्यालय	चंदूलाल चंद्राकर मेमोरियल चिकित्सा महाविद्यालय, दुर्ग
राज्य का प्रथम खेल विश्वविद्यालय	राजनांदगाँव (प्रस्तावित)
राज्य का प्रथम सरकारी चिकित्सा महाविद्यालय	पं. जवाहरलाल नेहरू स्मृति चिकित्सा महाविद्यालय, रायपुर (1963)

Unleash the topper in you

2 CHAPTER छत्तीसगढ़ का इतिहास :-प्राचीन काल

इतिहास

- **सामान्य अर्थ में इतिहास को अतीत की घटनाओं से जोड़ा जाता है**
- **विस्तृत अर्थ में** "इतिहास वर्तमान के प्रकाश में अतीत के अध्ययन को दर्शाता है " अर्थात वर्तमान में घटित घटनाओं को आधार बनाकर बीती हुई प्रवृत्तियों को समझने का प्रयास किया जाता है।

छत्तीसगढ़ का इतिहास

- **प्रागैतिहासिक काल**
- **आद्यऐतिहासक काल**
- **ऐतिहासिक काल**
  - **प्राचीन काल**
    - बौद्ध कालीन
    - जैन कालीन
    - महाकाव्य काल
    - मौर्यवंश
    - मौर्योत्तर काल
    - वंश
    - गुप्त गुप्तोत्तर वंश
  - **मध्य काल**
    - बौद्ध कालीन
    - जैन कालीन
    - महाकाव्य काल
    - मौर्यवंश
    - मौर्योत्तर काल
    - वंश
    - गुप्त गुप्तोत्तर वंश
  - **आधुनिक काल**
    - 1857 की क्रांति
    - छ.ग. में मराठा शासन-अप्रत्यक्ष, प्रत्यक्ष
    - छ.ग. में ब्रिटिश शासन- अप्रत्यक्ष, प्रत्यक्ष
    - छ.ग. का निर्माण

प्रागैतिहासिक काल

- **प्रागैतिहासिक** काल या पाषाण युग वह काल है, जिसके सन्दर्भ में कोई लिखित सामग्री उपलब्ध नहीं है।
- इस काल के इतिहास की जानकारी मुख्यतः पुरातात्विक स्त्रोतों से प्राप्त होती है।
- पाषाण युग में मनुष्य, पशुओं की भांति जंगलों, पर्वतों और नदी के तटों पर अपना जीवन व्यतीत करता था।
- नदियों की घाटियाँ प्राकृतिक रूप से मानव का सर्वोत्तम आश्रय स्थल था।
- इस **काल** में मानव पशुओं के शिकार के लिए पत्थरों को नुकीला बनाकर औजार के रूप में प्रयोग करने लगा।
- पत्थर के प्रयोग के कारण यह युग पाषाण युग के नाम से जाना जाता है।

विकास की अवस्था के आधार पर इस युग को चार भागों में विभाजित किया गया है-

पाषाण युग

- **पूर्व पाषाण युग**
  - महानदी घाटी
  - रायगढ़ जिले के सिंघनपुर, कबरा पहाड़, बोतल्दा, छापामारा भंवरखोल, गीधा, सोनबरसा
- **मध्य पाषाण युग**
  - रायगढ़ जिले के कबरा पहाड़
  - रायगढ़ जिले के सिंघनपुर, कबरा पहाड़, बोतल्दा, छापामारा भंवरखोल, गीधा, सोनबरसा
- **उत्तर पाषाण युग**
  - महानदी घाटी,
  - बिलासपुर जिले के धनपुर
  - रायगढ़ जिले के सिंघनपुर
- **नव पाषाण युग**
  - बालोद जिले के अर्जुनी
  - राजनांदगाँव जिले के चितवा डोंगरी
  - रायगढ़ जिले के टेरम

नोट- ताम्र लौह युग के साक्ष्य बालोद जिले के करहीभदर, चिरचारी और सोरर से प्राप्त होते है

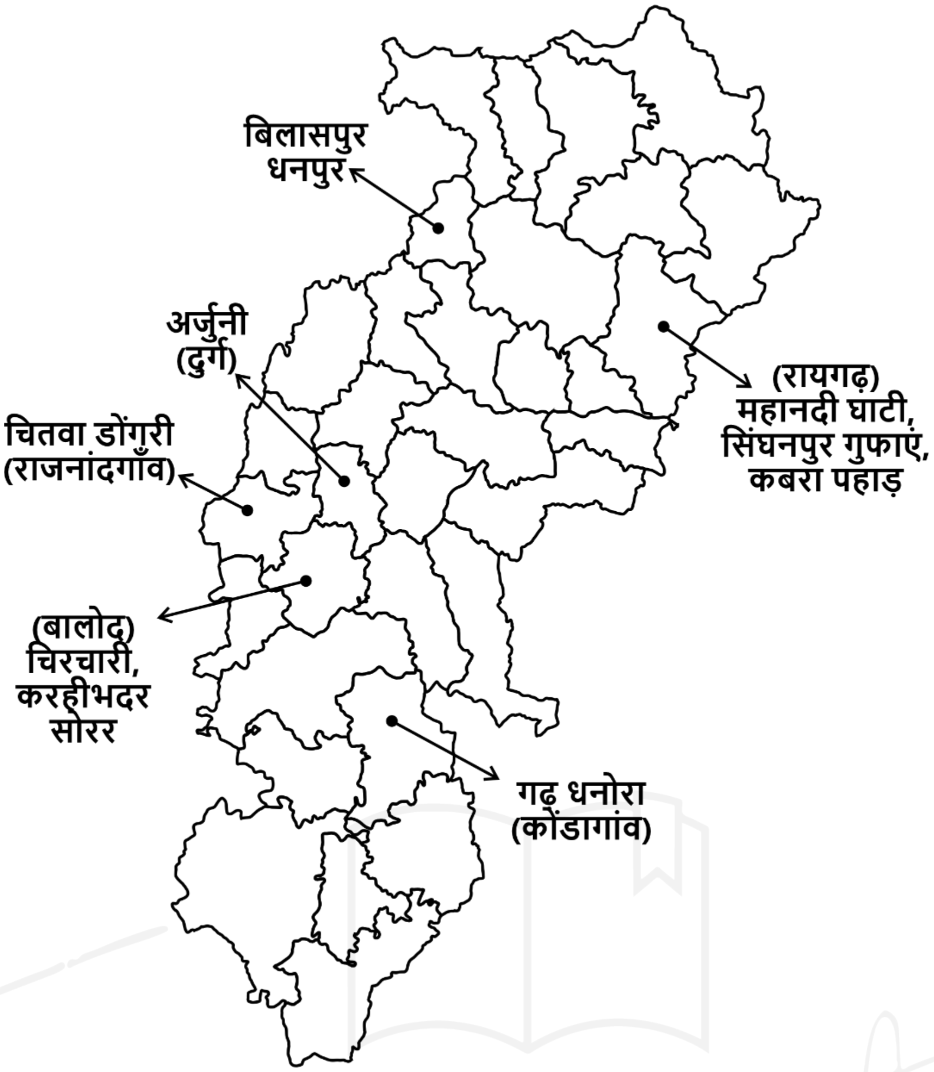

<u>मानचित्र- प्रागैतिहासिक कालीन छत्तीसगढ़</u>

पूर्व पाषाण युग (10लाख-10हज़ार ई.पू.)

- महानदी घाटी तथा रायगढ़ जिले के **सिंघनपुर, कबरा पहाड़, बोतल्दा, छापामारा भंवरखोल, गीधा, सोनबरसा.**
- इन क्षेत्रों में शैलचित्रों के साथ-साथ पाषाण युगीन पत्थर के साथ लघु पाषाण औजार भी प्राप्त हुए हैं।

मध्य पाषाण युग (10हज़ार-9हज़ार ई.पू.)

- मध्य युग के लंबे फलक, अर्द्ध चंद्राकार लघु पाषाण के औजार रायगढ़ जिले के **'कबरा पहाड़'** से चित्रित शैलाश्रय के निकट से प्राप्त हुए हैं।
- इस काल के उपकरण अवशेष बस्तर जिले में **कालीपुर, गढ़धनोरा, खड़ागघाट, गढ़चंदेला, घाटलोहांग, भातेवाड़ा, राजपुर** आदि स्थानों से प्राप्त हुए हैं।

उत्तर पाषाण युग (9हज़ार-7हज़ार ई.पू.)

- उत्तर पाषाण युग के लघुकृत पाषाण औजार एवं लंबे फलक, अर्ध चंद्राकार फलक, महानदी घाटी, बिलासपुर जिले के **धनपुर** तथा रायगढ़ जिले के **सिंघनपुर** के चित्रित शैलगृहों के निकट से प्राप्त हुए हैं।
- छत्तीसगढ़ से लगे हुए ओड़िशा के कालाहांडी, बलांगीर एवं संबलपुर जिले की **तेल नदी एवं उसकी सहायक नदियों** के तटवर्ती क्षेत्र से लगभग **26 स्थानों से** इस काल के औजार प्राप्त हुए हैं।

नव पाषाण काल (7हज़ार-4हज़ार ई.पू.)

- इस काल में मनुष्य ने कृषि कर्म, पशु पालन, गृह निर्माण तथा बर्तनों का निर्माण, कपास अथवा ऊन कातना आदि कार्य सीख लिया था ।
- इस युग के औजार बालोद जिले के **अर्जुनी**, राजनांदगाँव जिले के **चितवा डोंगरी** तथा रायगढ़ जिले के **टेरम** नामक स्थानों से प्राप्त हुए हैं।
- धमतरी **बालोद मार्ग** पर लोहे के उपकरण प्राप्त हुए हैं।
- नव पाषाण काल में मनुष्य गुफाओं में चित्रकारी करने की कला जानता थे।

छत्तीसगढ़ से सम्बंधित अन्य प्रागैतिहासिक स्थल

स्थान	जिला	विशेष
उड़कुरा	कांकेर	एलियन का चित्रण
चितवा डोंगरी	राजनांदगांव	चीनी ड्रैगन
सिंघनपुर	रायगढ़	सबसे सप्राचीनतम शैलचित्र मनुष्य समूह सीढ़ी से आखेट करता मनुष्य
कबरा पहाड़	रायगढ़	लाल रंग की छिपकली सर्वाधिक शैलचित्र
करमागढ़	रायगढ़	जलचर प्राणी के चित्र सांप, मछली, मेढक
बेलीपाठ	रायगढ़	मछली व पुष्पलताओं का चित्र
खैरपुर	रायगढ़	अंधेर में चमकते शैल चित्र
टीपाखोल	रायगढ़	मानव व पशुओं के अंधेर में चमकते चित्र
बोतल्दा	रायगढ़	प्राग ऐतिहासिक कालीन सबसे लम्बी गुफा सूर्य मंदिर के अवशेष (गुप्तकालीन)
भैसगढी	रायगढ़	शैलचित्र.
ओगना	रायगढ़	पुष्पलताओं व पक्षी का चित्रण

छत्तीसगढ़ से सम्बंधित प्रागैतिहासिक काल के शैलचित्र

- सिंघनपुर ग्राम के समीप चंवरढाल पहाड़ियां के शैलाश्रयों को सर्वप्रथम **1910 ई. एण्डरसन ने** देखा था तथा बाद में **रेल्वे इंजीनियर अमरनाथ दत्त** ने इन शैलचित्रों (गुफा चित्रों) का अध्ययन किया।
- **सर्वाधिक शैलचित्र रायगढ़ जिले में** प्राप्त हुए हैं।
- **रायगढ़ जिले** के सिंघनपुर, कबरा पहाड़, करमागढ़, बसनाझार, ओंगना, बोतल्दा आदि स्थानों से प्राचीनतम शैलचित्र प्राप्त हुए हैं।
- सामन्यतः शैलचित्र लाल रंग के पशुओं, सरीसृपों तथा टोटेमवादी चिन्हों का विभिन्न रूपांकन के रूप में है।
- खड़ी तथा आड़ी रेखाएं खींचकर मानव आकृतियां बनाई गई हैं।
- एक चित्र में कुछ व्यक्तियों के समूह को सुंदर तथा लाठियां हाथों में लिए पशु को पीछे की ओर गर्दन मोड़े दिखाया गया है और एक मनुष्य को डरावनी मुद्रा में चित्रित किया गया है।
- **कबरा पहाड़ में** लाल में लाल रंग से छिपकली, घड़ियाल, सांभर अन्य पशुओं तथा पंक्तिबद्ध मानव समूह का चित्रण किया गया है।
- **सिंघनपुर में** मानव आकृतियाँ, सीधी, दण्ड के आकार की तथा सीढ़ी के आकार में अंकित की गई है।
- **राजनांदगांव जिले में** अंबागढ़ चौकी के चितवा डोंगरी के शैलचित्रों का सर्वप्रथम अध्ययन भगवान सिंह बघेल एवं डॉ. रमेन्द्रनाथ मिश्र ने किया था।

आद्य ऐतिहासिक काल

- प्रागैतिहासिक काल एवं ऐतिहासिक काल के मध्य का संक्रमण काल आद्य ऐतिहासिक काल कहलाता है।
- इस कालखंड का सम्बन्ध सिंधु घाटी कांस्य युगीन सभ्यता से है छत्तीसगढ़ में इस सभ्यता के साक्ष्य सामान्यतः प्राप्त नहीं हुए हैं
- सिंधु सभ्यता के लोग कांस्य निर्माण में ताँबे एवं टिन का प्रयोग करते थे।
- सिन्धु घाटी सभ्यता में लघु मूर्तियों के निर्माण में लॉस्ट वैक्स पद्धति का प्रयोग किया जाता था। इसे वर्तमान में बस्तर के घड़वा शिल्प से संदर्भित किया जा सकता है।

महापाषाण काल एवं ताम्रपाषाण काल

- पाषाण युग के पश्चात् 'ताम्रयुग' आता है जिसमें ताम्र और पाषाण दोनों से ही निर्मित औजार प्रयोग में लाये जाते थे ।
- छत्तीसगढ़ के दक्षिण कोसल क्षेत्र में इस काल की सामग्री का अभाव है, किन्तु निकटवर्ती बालाघाट जिले के **'गुंगेरिया'** नामक स्थान से ताँबे के औजार का एक बड़ा संग्रह प्राप्त हुआ है। यहाँ से 424 तांबे के औजार और 102 चाँदी के आभूषण मिले।
- ताम्रयुग में शव को गाड़ने के लिये बड़े-बड़े शिलाखण्डों का प्रयोग किया जाता था। इसे महापाषाण स्मारकों के नाम से संबोधित किया जाता है।
- इन समाधियों को **'महापाषाण पट्टतुम्भ'** (डॉलमेन) भी कहा जाता है।
- **बालोद जिले** के करहीभदर, चिरचारी और सोरर में पाषाण घेरों के अवशेष मिले हैं। इसी जिले के करकाभाटा से पाषाण घेरे के साथ लोहे के औजार और मृदभाण्ड प्राप्त हुए हैं।
- **धनोरा** (बालोद जिला) से लगभग **500 महापाषाण स्मारक** प्राप्त हुए हैं, जिसकी खुदाई **सन् 1956-57 में डॉ. एम. जी. दीक्षित** द्वारा किया गया तथा जिसका **व्यापक सर्वेक्षण प्रोफेसर जे. आर. कांबले एवं डॉ. रमेन्द्रनाथ मिश्र** ने सर्वप्रथम किया है।
- **कालाहाण्डी जिले की नवापारा तहसील में** स्थित सोनाभीर नामक ग्राम में पाषाण का घेरा मिला है।
- कोण्डागांव **जिले के गढ़धनोरा में** ताम्रपाषाण कालीन आवास का घेरा प्राप्त हुआ है।

3 CHAPTER

वैदिक काल(1500-600 ई.पू.)

पूर्व वैदिक काल(1500-1000 ई.पू.)

- पूर्व वैदिक सभ्यता की जानकारी देने वाले ग्रन्थ 'ऋग्वेद' में छत्तीसगढ़ से संबंधित कोई जानकारी नहीं मिलती।
- इसमें विन्ध्य पर्वत एवं नर्मदा नदी का उल्लेख नहीं है।
- ऋग्वेद में उल्लेखित **'दक्षिणपदा'** शब्द से मैण्डानल एवं कीथ ने दक्षिणापथ अर्थात् विन्ध्य के दक्षिणवर्ती भू-प्रदेश का आशय ग्रहण किया है।

उत्तर वैदिक काल(1000-600 ई.पू.)

- इस काल में देश के दक्षिण भाग से संबंधित विवरण मिलते हैं।
- उत्तर वैदिक साहित्य में आये दक्षिणदिक से **सीतानाथ प्रधान** ने दक्कन प्रदेश का बोध होना स्वीकार किया है।
- **'शतपथ ब्राह्मण'** में पूर्व एवं पश्चिम में स्थित समुद्रों का उल्लेख मिलता है।
- **'कौषीतिक उपनिषद'** में विंध्य पर्वत का नामोल्लेख है।
- परवर्ती वैदिक साहित्य में **नर्मदा का उल्लेख रेवा के रूप में** मिलता है।
- वैदिक आर्य दक्षिण पथ के अन्तर्गत दक्कन के पूर्वोत्तर में स्थित छत्तीसगढ़ से भली-भांति परिचित थे।

महाकाव्य काल

रामायण काल

- राम की माता कौशल्या **राजा भानुमन्त** की पुत्री थी। कौशल्या का नाम अपने पिता के नाम के कारण भानुमति ही था।
- राजा दशरथ से विवाह के बाद भानुमति कोसल प्रदेश के होने के कारण कौशल्या नाम से पुकारी गयी।
- **'कोसल खण्ड'** नामक एक अप्रकाशित ग्रन्थ से जानकारी मिलती है कि विन्ध्य पर्वत के दक्षिण में नागपत्तन के पास कोसल नामक एक शक्तिशाली राजा था। इनके नाम पर ही इस क्षेत्र का नाम कोसल पड़ा।
- राजा कोसल के वंश में भानुमन्त नामक राजा हुआ, जिसकी पुत्री का विवाह अयोध्या के राजा दशरथ से हुआ था। भानुमन्त का कोई पुत्र नहीं था, अतः कोसल (छत्तीसगढ़) का राज्य राजा दशरथ को प्राप्त हुआ।
- इस प्रकार राजा दशरथ के पूर्व ही इस क्षेत्र का नाम कोसल होना ज्ञात होता है।
- मान्यता अनुसार वनवास के समय संभवतः श्री राम ने अधिकांश समय छत्तीसगढ़ के आस-पास के क्षेत्र में व्यतीत किया था।
- श्री राम के पश्चात् **'उत्तर कोसल' के राजा उनके ज्येष्ठ पुत्र लव** हुए, जिनकी राजधानी श्रावस्ती थी और अनुज **कुश को 'दक्षिणकोसल'** मिला, जिसकी राजधानी कुशस्थली थी।

स्थानीय परंपरा के अनुसार रामायण कालीन प्रमुख स्थल-

क्षेत्र	रामायणकालीन सम्बंधित घटनाएं
शिवरीनारायण (जिला- जांजगीर-चांपा)	• राम ने यहीं शबरी के जूठे बेर खाए ।
खरौद (जिला- जांजगीर-चांपा)	• राम द्वारा खरदूषण का वध ।
तुरतुरिया (जिला- बलौदाबाजार)	• महर्षि वाल्मीकि का आश्रम जहां लवऔर कुश का जन्म हुआ ।
पंचवटी (केशकाल के निकट)	• रावण द्वारा सीताहरण।
दण्डकारण्य (बस्तर)	• रामायण के अरण्य काण्ड में दण्डकवन के रूप में इस क्षेत्र उल्लेख किया गया है। • वनवास के दौरान राम ने यहां अपना अधिकांश समय बिताया।
सिहावा पर्वत (धमतरी)	• श्रृंगी ऋषि का आश्रम, श्रृंगी ऋषि ने पुत्रेष्टि यज्ञ किया था।
रामगढ़ की पहाड़ी (सरगुजा)	• सीताबेंगरा, रामगढ़, लक्ष्मणबेंगरा, किसकिंधा पर्वत, सीताकुण्ड हाथीखोह, • इन स्थानों पर वनवास के दौरान राम, लक्ष्मण और सीता ने अपना समय व्यतीत किया था।
रामझरना (रायगढ़), कोरिया	• सीतामढ़ी हरचौका, सीतामढ़ी घाघरा ।

Toppersnotes Unleash the topper in you

छत्तीसगढ़ में राम वन गमन पथ

- भगवान राम अपने वनवास काल के दौरान छत्तीसगढ़ क्षेत्र में प्रवेश से लेकर छत्तीसगढ़ के भू-भाग को छोड़ने तक अर्थात् **कोरिया से लेकर सुकमा** तक |
- राम वन गमन पथ की विस्तृत कार्ययोजना को लेकर छत्तीसगढ़ सरकार का लक्ष्य पहले चरण का कार्य 2022 के अंत तक या 2023 के मध्य तक पहले चरण का लक्ष्य पूरा करना था।"
- राम वन गमन पथ की **कुल लंबाई 2260 किलोमीटर** है।
- इन रास्तों पर किनारे जगह-जगह साइन बोर्ड, श्री राम के वनवास से जुड़ी कथाएं देखने और सुनने को मिलेंगी।
- राम वन गमन पथ के पहले चरण में 9 स्थानों का चयन किया गया है। वे स्थान हैं-
  1. हरचौका (कोरिया),
  2. रामगढ़ (सरगुजा),
  3. शिवरीनारायण (जांजगीर चांपा),
  4. तुरतुरिया (बलौदाबाजार),
  5. चंद्रखुरी (रायपुर),
  6. राजिम (गरियाबंद),
  7. सिहावा सप्तऋषि आश्रम (धमतरी),
  8. जगदलपुर (बस्तर),
  9. जगत रामाराम (सुकमा)

महाभारत काल

- महाभारत काल में इस क्षेत्र का उल्लेख **सहदेव द्वारा जीते गए राज्यों में प्राक्कोसल के रूप में** मिलता है।
- बस्तर के जंगली क्षेत्र को '**कान्तार**' कहा गया है।
- कर्ण द्वारा की गई दिग्विजय में भी कोसल जनपद का नाम मिलता है।
- राजा नल के दक्षिण दिशा का मार्ग बनाते हुए भी विन्ध्य के दक्षिण में कोसल राज्य का उल्लेख किया था।
- महाभारतकालीन ऋषभतीर्थ भी जांजगीर-चांपा जिले में सक्ती के निकट '**गुंजी**' नामक स्थान से समीकृत किया जाता है।
- **पंडित लोचन प्रसाद पाण्डेय के अनुसार** महाभारत के वनपर्व में वर्णित **ऋषमतीर्थ** नामक स्थान जो जांजगीर-चांपा जिले में सक्ती के निकट स्थित है

- स्थानीय परंपरा के अनुसार भी **मोरध्वज और ताम्रध्वज की राजधानी 'मणिपुर**' का तादात्म्य वर्तमान 'रतनपुर' से किया जाता है।
- माना जाता है कि अर्जुन पुत्र 'बभ्रुवाहन' की राजधानी चित्रंगदपुर (सिरपुर) थी।
- रायपुर जिले के आरंग को भी मोरध्वज की नगरी कहा जाता है।
- राजा मोरध्वज ने अपने पुत्र ताम्रध्वज को आरे से छद्मवेशी सिंह के लिए काट दिया था। आरे से अंग को काटे जाने के कारण इस नगर का नाम आरंग पड़ा।
- जनश्रुति के अनुसार के अनुसार **खल्लारी (महासमुंद) में दुर्योधन ने लाख का महल** (लाक्षागृह) का निर्माण करवाया।
- इस क्षेत्र में राज्य करते हुए **इक्ष्वाकुवंशियों** का वर्णन मिलता है।
- साथ ही यह भी माना जाता है कि वैवस्वत मनु के पौत्र तथा सुद्युम्न के पुत्र विवस्वान को यह क्षेत्र प्राप्त हुआ था।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

4
CHAPTER

महाजनपद काल (छठवीं शताब्दी ईसा पूर्व)

- ईसा पूर्व छठवीं शताब्दी में भारत जनपदों एवं महाजनपदों में विभक्त थी।
- बौद्ध ग्रंथ **'अंगुत्तर निकाय'** तथा जैन ग्रंथ **'भगवतीसूत्र'** में वार्णित 16 जनपदों का उल्लेख मिलता है ।
- छत्तीसगढ़ का वर्तमान क्षेत्र भी (दक्षिण) कोसल के नाम से एक पृथक प्रशासनिक इकाई थी।
- **'अवदान शतक'** नामक एक ग्रंथ के अनुसार महात्मा बुद्ध दक्षिण कोसल आये थे तथा लगभग तीन माह तक यहाँ की राजधानी में उन्होंने प्रवास किया था।
- यह जानकारी बौद्ध यात्री व्हेनसांग के यात्रा वृतांत **'सी-यू-की'** से भी मिलती है।

छत्तीसगढ़ में नन्द-मौर्य वंश

- दक्षिण कोसल का क्षेत्र भी संभवतः नन्द-मौर्य साम्राज्य का अंग था।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने घनानन्द की हत्या कर मौर्य वंश का आधिपत्य स्थापित किया।
- चन्द्रगुप्त के साम्राज्य में **कलिंग और अश्मक** के साथ-साथ कोसल भी सम्मिलित था।
- चन्द्रगुप्त प्रथम की सेना में **आटविक जन** अधिक संख्या में थे, ये आटविक मध्यप्रदेश के आटविक राज्यों **(महाकांतार-बस्तर)** के निवासी थे। इससे छत्तीसगढ़ में मौर्यों की प्रभुसत्ता का आभास होता है।
- चीनी यात्री व्हेनसांग के यात्रा विवरण के अनुसार सम्राट अशोक ने यहाँ बौद्ध स्तूप का निर्माण कराया था। अशोक के साम्राज्य के अंतर्गत **आन्ध्र कलिंग एवं रूपनाथ (जबलपुर)** के होने की जानकारी यहाँ प्राप्त उसके अभिलेखों से होती है।
- **रायपुर जिले के तारापुर, आरंग, उड़ेला** आदि स्थानों से कुछ आहत मुद्राएँ प्राप्त हुई है, जिनका वजन 12 रत्ती का है। अतः इन्हें तकनीकी दृष्टि से प्राक्-मौर्य काल का माना जाता है।
- मौर्य काल के सिक्के मुख्यतः **जांजगीर-चांपा के अकलतरा, ठठारी, रायगढ़ के बारगांव एवं बिलासपुर** से प्राप्त हुए हैं।
- **बलौदाबाजार जिले के तुरतुरिया** नामक स्थान में **बौद्ध भिक्षुकों का विहार** था, वहां **बुद्ध देव की विशाल मूर्ति** विद्यमान है।
- **डॉ. रमेन्द्र नाथ मिश्र ने 1969-70 में** आरंग तथा गुजरा गांव में आहत सिक्कों की खोज की थी जो **गोनगल श्रेणी** की है।
- सरगुजा जिले के रामगढ़ की पहाड़ी पर स्थित **'जोगीमारा' और 'सीताबेंगरा ' नामक गुफाएँ** हैं,
- जोगीमारा से अशोक कालीन लेख की भाषा - पाली एवं लिपि-ब्राम्ही में **'सुतनुका' नामक देवदासी एवं उसके प्रेमी 'देवदत्त' का उल्लेख** है।
- **रायबहादुर हीरालाल** के अनुसार कलिंग देश महानदी और गोदावरी के बीच बंगाल की खाड़ी के किनारों का प्रदेश था, जिसमें कुछ भाग छत्तीसगढ़ का आ जाता है।
- इससे यह सिद्ध होता है कि अशोक ने मध्यप्रदेश के पूर्वी भाग छत्तीसगढ़ को जीता था।
- **सीताबेंगरा** विश्व की प्राचीन नाट्यशाला मानी गई है।
- **जोगीमारा** और सीताबेंगरा की गुफाओं को **सन् 1848** ईस्वी में शिकार के दौरान **कर्नल आउसले** ने खोजा तथा **1904 ईस्वी में डॉ. ब्लास** ने इस पर प्रकाश डाला था